दो शब्द

मित्रवर पं० द्वारकाप्रसादजी के प्रोत्साहन और मार्गनिदर्शन के बिना तो लेखनी को चलने का साहस ही न होता। अतः उनका आभार हृदय का विषय है न कि शब्दों का। जिन और मित्रों के अथक प्रयास के बिना इस कृति का प्रगट होना संभव न था उन्हें कैसे भूलूँ? पहला श्रेय तो है प्रोफेसर इन्द्रदेव आर्य को जिन्होंने अत्यधिक कष्ट उठाकर पांडुलिपि तैयार कराई और बाद में प्रूफ-संशोधन का लगभग पूरा काम किया। दूसरे, मैं अनुगृहीत हूँ मेरे मित्र डाक्टर रामकुमार वर्मा का जिनकी परम कृपा के कारण इसका प्रकाशन हो सका। अंत में मैं गृहीत हूँ हिन्दी साहित्य प्रेस के संचालकों का, मुख्यतः श्री बेनीप्रसाद टंडनजी का, जिन्होंने अनेक कठनाइयों के रहते, पुस्तक को यह सुन्दर रूप दिया।

दुर्गाशंकर मेहता